ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 1.9152(UIF) VOLUME - 4 | ISSUE - 1 | SEPTEMBER - 2017

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

# विश्व पटल पर महात्मा गाँधी

*प्रवीण पाठक*
*पी–एच.डी. गांधी एवं शांति अध्ययन*
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा.

**सारांश**

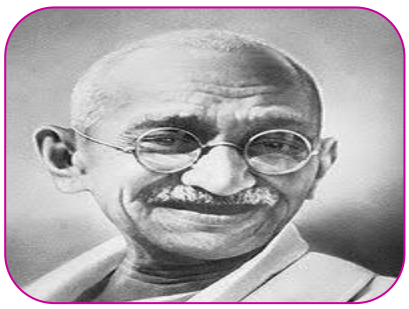

गांधीजी सत्य और अहिंसा को जीवन में सर्वाधिक महत्त्व देते थे । सत्याग्रह और असहयोग द्वारा उन्होंने अंग्रेजों का मुकाबला किया । वे सभी मनुष्यों को समान मानते थे । धर्म, जाति, सम्प्रदाय, रंग, नस्ल के आधार पर किये जाने वाले भेदभाव को मानवता के विरुद्ध कलंक मानते थे । गांधीजी ने अछूतों को हरिजन कहा । व आर्थिक असमानता को मिटाकर वर्गविहीन, जातिविहीन समाज की स्थापना करना चाहते थे ।उन्होंने शारीरिक श्रम व सामाजिक न्याय को विशेष महत्त्व दिया । वे प्रजातान्त्रिक राज्य को कल्याणकारी राज्य मानते थे । गांधीजी के अनुसार– "नैतिक आचरण का जीवन में विशेष महत्त्व होना चाहिए । सत्य, न्याय, धर्म, अहिंसा, अपरिग्रह, निःस्वार्थ सेवा मानवता की सच्ची सेवा है । दीन–दुखियों की सेवा ही सच्चा धर्म है ।"उन्होंने राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय विचारों के तहत वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को विशेष महत्त्व दिया । किसी भी राष्ट्र के समुचित उत्थान क लिए परिवार, जाति, गांव, प्रदेश तथा देश की समस्याओं का सुधार होना चाहिए । खुद सुधरो, तो जग सुधरेगा, यह उनका मानना था ।देश को विकास एवं आजादी की राह पर खड़ा करने एवं मानवता को नयी दिशा देने वाले प्यारे बापू साम्प्रदायिकता के घोर विरोधी थे । 30 जनवरी 1948 को राष्ट्र के इस महामानव को प्रार्थना सभा में जाते हुए नाथूराम गोडसे नामक एक नवयुवक ने गोली मार दी । गांधीजी मरकर भी अमर हो गये.

*मुख्य शब्द. महात्मा गांधी सत्याग्रह अहिंसावाद .*

## प्रस्तावना

महापुरुषों में महात्मा गांधी का नाम आधुनिक युग में सर्वज्ञात है। गांधी जी को भारतीय स्वाधीनता संग्राम में योगदान के लिए ही याद किया जाता है, ऐसा नहीं है, बल्कि गांधी विचारधारा, उनके सत्याग्रह एवं अहिंसावाद ने उन्हें विश्वपूज्य बनाया है सभारत समेत संपूर्ण विश्व में आज महात्मा गांधी के जन्मदिन को अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाता हैद्य वह विश्व में सत्य और अहिंसा के प्रेरणास्रोत और भारत में स्वतंत्रता संघर्ष के सूत्रधार के रूप में याद किए जाते हैं।बड़ी से बड़ी लड़ाई को सत्य और अहिंसा के रास्ते जीतने का बड़ा सीधा सा मंत्र बताने वाले मोहनदास कर्मचंद गांधी का जन्म गुजरात के पोरबंदर में 2 अक्तूबर 1869 को हुआ. उन्हें दुनिया भले ही महात्मा बुलाती रही, लेकिन खुद वह इसकी ज्यादा परवाह नहीं करते थे.महात्मा गाँधी सम्पूर्ण विश्व पटल पर सिर्फ एक नाम ही नहीं, अपितु शांति और अहिंसा का एक प्रमुख प्रतीक हैं। महात्मा गाँधी के पूर्व भी शान्ति और अहिंसा की अवधारणा फलित थी, परन्तु उन्होंने जिस प्रकार सत्याग्रह, शान्ति व अहिंसा के रास्तों पर चलते हुये अंग्रेजों को भारतछोड़ने पर मजबूर कर दिया, उसका कोई दूसरा उदाहरण विश्व इतिहास में देखने को नहीं मिलता। तभी तो प्रख्यात वैज्ञानिक आइंस्टीन ने कहा था कि– हजार साल बाद आने वाली नस्लें इस बात पर मुश्किल से विश्वास करेंगी, कि हाड़–मांस से बना ऐसा कोई इन्सान पृथ्वी पर कभी आया था। अपनी वैज्ञानिक मेधा और प्रयोगों से विश्व को चमत्कृत करने वाले अल्बर्ट आइंस्टाइन ने तो यह तक लिखा कि "आने वाली पीढ़ी बहुत मुश्किल से विश्वास करेगी कि गांधी जैसा कोई व्यक्ति इस धरती पर था।" फ्रांसीसी लेखक रोमां रोला ने भी लिखा था, "जब मैं गांधी का स्मरण करता हूँ तो मुझे जीसस क्राइस्ट की याद आती है।" संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी वर्ष 2007 से गाँधी जयन्ती को 'विश्व अहिंसा दिवस' के रूप में मनाये जाने की घोषणा की किया गया कि महात्मा गाँधी ने अहिंसा को अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया, हालाँकि उन्हें बहुत ही दमनकारी हालात का भी सामना करना पड़ा.यहाँ तक कि उन्हें नाकाबिले बर्दाश्त चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा लेकिन फिर भी उन्होंने संयम और अहिंसा का दामन नहीं छोड़ा जिसने मानवता के लिए एक मिसाल कायम की.अन्तरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के अवसर पर संयुक्त राष्ट्र महासचिव बान की मून ने अपने खास सन्देश में कहा कि 1948 में Universal Declaration of Human Rights यानी मानवाधिकारों का

सार्वभौम घोषणा–पत्र स्वीकृत हुआ था.ये वही साल है जिसमें महात्मा गाँधी की मौत हुई थी, इसलिए ये बहुत महत्वपूर्ण बात है कि मानवाधिकारों के इस घोषणा–पत्र में महात्मा गाँधी के बहुत से मूल्य और सिद्धान्त झलकते हैं.द्यमहासचिव बान की मून ने कहा कि महात्मा गाँधी ने मानवता को साबित करके दिखाया कि सैनिक आक्रमण के जरिए जो हासिल नहीं किया जा सकता, वो शान्तिपूर्ण तरीकों से विरोध प्रदर्शनों के जरिए हासिल किया सकता है।सन 1930 में उन्हें अमेरिका की टाइम मैगजीन ने Man Of the Year का पुरुस्कार दिया था।अहिंसा की नीति के जरिए विश्व भर में शांति के संदेश को बढ़ावा देने के महात्मा गांधी के योगदान को सराहने के लिए इस दिन को अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया गया था.इस सिलसिले में संयुक्त राष्ट्र महासभा में भारत के रखे गए प्रस्ताव को व्यापक समर्थन मिला था.महासभा के कुल 191 सदस्य देशों में से 140 से भी ज़्यादा देशों ने इस प्रस्ताव को सह–प्रायोजित किया था.इनमें ***अफगानिस्तान, नेपाल, श्रीलंका, बांग्लादेश, भूटान*** जैसे भारत के पड़ोसी देशों के अलावा अफ्रीका और अमरीका महाद्वीप के कई देश शामिल थे.मौजूदा विश्व व्यवस्था में अहिंसा की सार्थकता को मानते हुए बिना मतदान के ही सर्वसम्मति से इस प्रस्ताव को पारित कर दिया गया था.राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का मानना था कि विश्व में वास्तविक शांति लाने के लिए बच्चे ही सबसे सशक्त माध्यम हैं। उनका कहना था कि यदि हम इस विश्व को वास्तविक शान्ति की सीख देना चाहते हैं और यदि हम युद्ध के विरूद्ध वास्तविक युद्ध छेड़ना चाहते हैं, तो इसकी शुरुआत हमें बच्चों से करनी होगी।इस प्रकार महात्मा गाँधी के विश्व बंधुत्व के सपने को साकार करने के लिए हमें प्रत्येक बालक को बाल्यावस्था से ही भौतिक, सामाजिक एव आध्यात्मिक शिक्षा के साथ ही सार्वभौमिक जीवन–मूल्यों की शिक्षा देकर उसे विश्व नागरिक बनाना होगा। गाँधी जी का मानना था कि भविष्य में सारी दुनिया में शांति, सुरक्षा एवं प्रगतिशील विश्व के निर्माण हेतु स्वतंत्र राष्ट्रों के संघ (विश्व सरकार) की अत्यन्त आवश्यकता ह वर्तमान समय में जबकि नैतिक मूल्यों का निरन्तर ह्रास हो रहा है, गांधी जी के विचारों की बहुत प्रासंगिकता है। गांधी जी का महत्त्व उनके दार्शनिक विचारों से और भी बढ़ जाता है। आधुनिक भारतीय दर्शन एवं व्यावहारिक दर्शन के अन्तर्गत गांधी–दर्शन सर्वोत्कृष्ट एवं सर्वसिद्ध है। उसके श्रेष्ठ होने के पीछे उसकी सार्वभौमिकता है। गांधी दर्शन के प्रमुख चार तत्त्व हैं। आध्यात्मिकता, नैतिकता, राजनीति एवं रचनात्मकता राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी केवल भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के पितामह ही नहीं थे अपितु उन्होंने विश्व के कई देशों को स्वतंत्रता की राह भी दिखाई महात्मा गाँधी चाहते थे कि भारत केवल एशिया और अफ्रीका का ही नहीं अपितु सारे विश्व की मुक्ति का नेतृत्व करें। उनका कहना था कि एक दिन आयेगा, जब शांति की खोज में विश्व के सभी देश भारत की ओर अपना रूख करेंगे और विश्व को शांति की राह दिखाने के कारण भारत विश्व का प्रकाश बनेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ऑस्ट्रेलिया के रोमा स्ट्रीट पर गांधी प्रतिमा का अनावरण किया। यहां बड़ी संख्या में लोगों ने उनका स्वागत किया। इस मौके पर बोलते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि ऑस्ट्रेलिया में गांधी जी की प्रतिमा का अनावरण करना उनके लिए सौभाग्य की बात है प्रधानमंत्री मोदी के भाषण के मुख्य अंश ग्लोबल वार्मिंग और आतंकवाद दुनिया की बड़ी समस्या आवश्यकता से अधिक प्रकृति का दोहन ही ग्लोबल वार्मिंग का सबसे बड़ा कारण है। महात्मा गांधी कभी भी आवश्यकता से अधिक प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग नहीं करते थे। बापू प्रकृति के लिए काफी सजग थे, अगर उनके जीवन को हम अपनाते तो ग्लोबल वार्मिंग की समस्या से निपट सकते हैं। अहिंसा सिर्फ अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने का शस्त्र नहीं था। दुनिया को गांधी के संदेश को अपनाना चाहिए, जिससे विश्वस्तर पर शांति आ सकती है। कोई सिर्फ बड़ा है इस नाते उसे दूसरों पर अपना अधिकार नहीं जताना चाहिए। दुनियाभर के देशों को एक साथ मिलकर चलना चाहिए। दुनिया अब महात्मा गांधी के संदेश को अपना रही है। कई देशों ने महात्मा गांधी की जन्म शताब्दी, 125 वीं जयंतो व भारत की 50वीं स्वतंत्रता वर्षगाँठ पर कई प्रकार के अलग–अलग मूल्यों के डाक टिकट व डाक सामग्रियाँ समय– समय पर जारी की हैं। शांति के मसीहा व सहस्त्राब्दि के नायक के रूप में भी अनेक देशों ने, गांधी जी के चित्रों को आधार बनाकर डाक टिकट व अन्य डाक सामग्रियाँ जारी की हैं। कई देशों ने महात्मा गांधी पर डाक टिकट ही नहीं, बल्कि मिनीएचर और सोविनियर शीट्स जारी की लंदन के मेयर केन लिविंगस्टोन का कहना है। कि वे चाहते हैं कि पार्लियामेंट स्क्वैयर पर महात्मा गाँधी की एक प्रतिमा स्थापित की जाए.बीबीसी से बात करते हुए उन्होंने कहा कि भारत, ब्रिटिश इतिहास का हिस्सा रहा है कि महात्मा गाँधी की उपलब्धियों को महत्व दिया जाना चाहिए द्य .महात्मा गाँधी भारत के राजनीतिक और आध्यात्मिक नेता थे जिन्होंने 1947 में भारत की आजादी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी. यदि आप एक हजार साल के इतिहास के बारे में बात करें तो लोग महात्मा गाँधी को जानते हैं... लेकिन यदि आप ट्रफलगर स्क्वैयर में लगी दो जनरलों की प्रतिमा के बारे में पूछें तो लोगों को इतिहास की किताब के पन्ने पलटने होंगे. इस बात का विशेष श्रेय गांधी जी को ही दिया जाता है कि हिंसा और मानव निर्मित घृणा से ग्रस्त दुनिया में महात्मा गांधी आज भी सार्वभौमिक सदभावना और शांति के नायक के रूप में अडिग खड़े हैं और भी दिलचस्पऔ बात यह है कि गांधी जी अपने जीवनकाल के दौरान शांति के अगुवा बनकर उभरे तथा आज भी विवादों को हल करन के लिए अपनी अहिंसा की विचार–धारा से वे मानवता को आश्चदर्य में डालते हैं। बहुत हद तक यह महज एक अनोखी घटना ही नहीं हैद्य कि राष्ट्रि ब्रिटिश आधिपत्य के दौर में कंपनी शासन के विरूद्ध अहिंसात्मक प्रतिरोध के पथ पर आगे बढ़ा और उसके साथ ही गांधी जी जैसे नेता के नेतृत्व में अहिंसा को एक सैद्धांतिक हथियार के रूप में अपनाया। यह बहुत आश्चर्यजनक है कि उनकी विचारधारा की सफलता का जादू आज भी जारी है । क्या कोई इस तथ्य से इंकार कर सकता है कि अहिंसा और शांति का संदेश अब भी अंतर्राष्ट्रीय या द्विपक्षीय विवादों को हल करने के लिए विश्व नेताओं के बीच बेहद परिचित और आकर्षक शब्द है। यह कहने की जरूरत नहीं कि इस बात का मूल्यांकन करना कभी संभव नहीं हुआ कि भारत और दुनिया किस हद तक शांति के मसीहा महात्मा गांधी के प्रति आकर्षित है। आज दुनिया बहुत से और हर प्रकार के विवादों का सामना कर रही है, इसलिए हम देखते हैं कि सार्वभौमिक भाईचारे और शांति और सहअस्तितत्व के बारे में गांधी जी का बल आज भी पूरी तरह प्रासंगिक है। इसलिए उनकी शिक्षाएं आज भी देशभक्ति के सिद्धांत के साथ–साथ विभिन्नव वैश्विक विवादों को हल करने या समाप्त करने के मार्ग और

माध्यम सुझाती हैं। दरअसल गांधी जी की शिक्षाओं का प्रमाण इस तथ्य में निहित है, वह बुरे माध्यमों को तर्क संगत नहीं ठहराती है। इसलिए आज दुनियाभर में मानव प्रतिष्ठा और प्राकृतिक न्याय के मूल्य को बनाए रखने पर बल दिया जाता है। महात्मा गांधी ने भारत को आजादी दिलाई यह कहना कुछ अतिश्योक्ति मानते हैं तो कुछ लोग महात्मा गांधी को अप्रासंगिक सिद्ध करने के लिये हिंसा का समर्थन भी करते हैं। मूल बात यही है कि महात्मा गांधी आधुनिक समाज के संघर्षों में हिंसक की बजाय अहिंसक आंदोलन के प्रणेता थे। उनकी याद भले ही सब करते हों पर हथियारों के पश्चिमी सौदागर और विचारों के पूर्वी विक्रेता उनसे खौफ खाते हैं। गनीमत है पश्चिम वाले एक दिन महात्मा को याद कर अपने पाप का प्रायश्चित करते हैं पर पूर्व के लोग तो हिंसावाद को ही समाज में परिवर्तन का मार्ग मानते हैं। यहां यह भी बता दें कि महात्मा गांधी राज्य चलाने के किसी सिद्धांत के प्रवर्तक नहीं थे द्य क्योंकि उसके लिये आपको सत्ता की राजनीति करनी पड़ती है जिसका आंदोलन की राजनीति से दूर दूर तक कोई वास्ता नहीं होता। इसलिये ही सारी दुनियां की सरकारें महात्मा गांधी को याद करती है ताकि उनके विरुद्ध चलने वाले आंदोलन हिंसक न हों। महात्मा गाँधी समस्त पूर्वी चिन्तन के प्रतिनिधि विचारक कहे जा सकते हैं । शायद वे विश्व के एकमात्र ऐसे विचारक हैं, जिन्होंने लक्ष्यों और साधनों की पवित्रता को समान–रूप से महत्वपूर्ण माना। गाँधी जी ने एक राष्ट्रनायक के रूप में भारत की आजादी के आन्दोलन का नेतृत्व ही नहीं कियाद्य वरन् वे मानवीय मूल्यों की रक्षा का सन्देश देने वाले विश्व के महानतम चिंतक हैं। चिंतक होने के साथ–साथ महात्मा गाँधी राजनीतिज्ञ एवं समाज सुधारक भी थे । यहाँ यह बताना पर्याप्त है कि गाँधी जी की निष्ठा सभी वर्गो के प्रति समान थी गाँधी जी अस्पृश्यता को हिन्दू समाज का कलंक मानते थे और इस बात को स्वीकार करने के पक्ष में नहीं थे कि दलित वर्गों को समाज के अन्य वर्गों से पृथक रखते हुये हीन समझा जाये। गाँधी जी के अनुसार–''सामाजिक व्यवस्था, व्यक्ति तथा व्यक्ति के मध्य तथा पुरुष एवं नारी के मध्य समानता पर आधारित होगी। इस प्रकार की व्यवस्था में किसी प्रकार का भेदभाव नही होगा। यह नैतिक राष्ट्रवादी तथा आत्मज्ञानी व्यक्तियों का समाज होगा नई दिल्ली। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का जीवन भारत ही नहीं वरन पूरे विश्व के लिए एक प्रेरक रूप में है। सत्य और अहिंसा के पुजारी राष्ट्रपिता पिता महात्मा गांधी का नाम इतिहास के पन्नों में सदा के लिए अमर है। यही कारण है कि आज के दिन को पूरे विश्व में अहिंसा दिवस में मनाया जाता है। उन्होंने देश को आजाद कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। आज उनका नाम याद करते हुए गर्व का अनुभव होता हैद्य भले ही महात्मा आज हमारे बीच न हों, उनके विचार और आदर्श आज हम सबके बीच हैं, हमें उनके विचारों को अपने जीवन में उतारने की आवश्यकता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपना जीवन सत्य, सच्चाई की व्यापक खोज में समर्पित किया। उन्होंने इस लक्ष्य को प्राप्त करने करने के लिए अपनी स्वयं की गल्तियों और खुद पर प्रयोग करते हुए सीखने की कोशिश की। उन्होंने अपनी आत्मकथा को सत्य के प्रयोग का नाम दिया। गांधी जी ने कहा था कि सबसे महत्वपूर्ण लड़ाई लडने के लिए अपने दुष्टात्माओं , भय और असुरक्षा जैसे तत्वों पर विजय पाना जरूरी है। गांधी जी ने अपने विचारों को सबसे पहले उस समय संक्षेप में व्यक्त किया जब उन्होंने कहा, भगवान ही सत्य है द्य बाद में उन्होने अपने इस कथन को सत्य ही भगवान हैद्य में बदल दिया। इस प्रकार, सत्य म गांधी के दर्शन 'परमेश्वर' है। आज गाँधी जी के विचार पूरे विश्व में सर्वग्राह्य हैं। कभी आर्नल्ड टायनबी ने कहा था – ''मैं जिस पीढ़ी में पैदा हुआ, वह पीढ़ी पश्चिम में केवल हिटलर अथवा स्तालिन की ही पीढ़ी नहीं थी अपितु भारत में गाँधी जी की भी पीढ़ी थी। हम निश्चयपूर्वक यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि मानव इतिहास पर गाँधी जी का प्रभाव हिटलर और स्तालिन के प्रभाव से अधिक होगा।'' आज की नयी पीढ़ी गाँधी जी को एक नए रूप में देखना चाहती है। वह उन्हें एक सन्त के रूप में नहीं वरन् व्यवहारिक आदर्शवादी के रूप में प्रस्तुत कर रही है। 'लगे रहो मुन्ना भाई' जैसी फिल्मों की सफलता कहीं–न–कहीं युवाओं का उनसे लगाव प्रतिबिम्बित करती है। आज भी दुनिया भर के सर्वेक्षणों में गाँधी जी को शीर्ष पुरूष घोषित किया जाता है। हाल ही में हिन्दू– सी. एन. एन.– आई. वी. एन. द्वारा 30 वर्ष से कम आयु के भारतीय युवाओं के बीच कराए गए एक सर्वेक्षण में 76 प्रतिशत लोगों ने गाँधी जी को अपना सर्वोच्च रोल मॉडल बताया। बी.बी.सी. द्वारा भारत की स्वतंत्रता के 60 वर्ष पूरे होने पर किये गये एक सर्वेक्षण के मुताबिक आज भी पाश्चात्य देशों में भारत की एक प्रमुख पहचान गाँधी जी हैं। यही नहीं तमाम पाश्चात्य देशों में गाँधीवाद पर विस्तृत अध्ययन हो रहे हैं, संयुक्त राष्ट्र संघ ने गाँधी जयन्ती को 'विश्व अहिंसा दिवस' के रूप में मनाये जाने की घोषणा करके शान्ति व अहिंसा के पुजारी महात्मा गाँधी के विचारों की प्रासंगिकता को एक बार पुनः सिद्ध कर दिया है। सत्य, प्रेम व सहिष्णुता पर आधारित गाँधी जी के सत्याग्रह, अहिंसा व रचनात्मक कार्यक्रम के अचूक मार्गों पर चलकर ही विश्व में व्याप्त असमानता, शोषण, अन्याय, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, दुराचार, नक्सलवाद, पर्यावरण असन्तुलन व दिनों–ब–दिन बढ़ते सामाजिक अपराध को नियंत्रित किया जा सकता है।

## निष्कर्ष

**21**वीं सदी में महात्मा गांधीजी के विचारों की प्रासंगिकता हमेशा रहेंगी। वर्तमान समय में विश्व की समस्याओं का समाधान महात्मा गांधीजी के विचारों में सभी देश खोज रहें है ,क्योंकि उनकी समस्या का हल गांधीजी के विचारों में ही मिल सकता है।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1. दोशी ,एस,एल ,भारतीय सामाजिक विचारक ,रावत प्रकाशन ,2011
2. नागला ,बी ,के ,भारतीय सामाजिक चिंतन ,रावत प्रकाशन ,2015
3. शर्मा जी, एल ,सामाजिक मुद्दे ,रावत प्रकाशन , 2015

4. Jain, vidya, PEACE NON&VIOLENCE AND GANDHIAN CONCERNS, Rawat publications 2011
5. B-K- Nagl a, INDIAN SOCIOLOGICAL THOUGHT Rawat publication, 2001.

## Link web site

- http://bharatdiscovery
- महात्मा गांधी रू 5 महापुरुषों की नजर esahttp://hindi-webdunia-com
- महात्मा गांधीरू एक अद्भुत जीवन गाथ http://abpnews-abplive- in/india&news/mahatma&gandhi&7&139375
- लंदन के पार्लियामेंट स्क्वायर पर लगी महात्मा गांधी की प्रतिमा, http://khabar-ndtv-
- हनोवर के कुलेमंसट्रास में महात्मा गाँधी की प्रतिमा के अनावरण के बाद प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ http://pmindia-gov-in
- महात्मा गाँधी के संदेश को समझने की विश्व बिरादरी से अपील http://www-humsamvet-in/humsamvetp
- समग्र विश्वधारा में व्याप्त हैं महात्मा गाँधी, कृष्ण कुमार यादव http://www-rachanakar-org
- विश्व के महान व्यक्ति थे महात्मा गांधी, श्रीगोपाल 'नारसन' http://www-punjabkesari-in
- महात्मा गांधी के संदेश को आज विश्व अपना रहा है–पीएम मोदी, http://hindi-oneindia-com